ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue No.– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता

प्रो. गीता सिंह,

निदेशक , सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन हायर एजुकेशन (सीपीडीएचई), यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र , दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोध सारांश:

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक घनिष्ठता तथा समन्वय से दूर हैं| भारतोदय हेतु हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना एवं फैलाना परम आवश्यक हैं| आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म-ग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषीय गुण के लिए प्रसिद्ध रहा हैं| ये तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु, प्रत्येक भारतीय के भाव हैं जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं| भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरुप व्यवहारिक एवं दैनंदिनी जीवन को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक रहा है| इसे यह ध्यातव्य होता हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही हैं बल्कि भूतकाल में जन्मे सभी महान व्यक्तित्व जैसे- चरक, रामानुजम, सुश्रुत, आर्यभट्ट, बुद्ध, रैदास, वाल्मीकि, बिस्मिलाह खां, वराहमिहिर, महात्मा गांधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोषा, सावित्री, रमाबाई, चाँदबीबी, रजिया सुल्तान, मदर टेरेसा, एनी बेसेंट आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही हैं जिसे एक स्वस्थ भारतवर्ष एवं संस्कृति को पुनः स्तम्भित किया जा सके| यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती हैं कि, बालक अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थायी विकास समृद्ध जीवनयापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके तभी उससे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता हैं| इस कलपना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान, परम्परा, प्रथा, विचार एवं मूल्यों को नवचारित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा ना कि एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाये तभी बालक का विकास सनातनी ज्ञान अनुरूप संभव हैं | इस लेख में शोधार्थी द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया हैं|

पारिभाषिक शब्दावली- *सनातन ज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अर्वाचीन ज्ञान*

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य चिंतन की कई विमायें हैं, परन्तु पाश्चात्य ज्ञान इसका विरोध करता रहा हैं और ज्ञान की केवल एक ही धारा को मनाता और फैलाता रहा हैं| हम सभी आज भी उस धारा का हिस्सा बने हुए हैं| ब्रिटिश काल से प्रचलित हुई हमारी शिक्षा प्रणाली सदैव ही भारतीय ज्ञान को दबाने और पाश्चात्य ज्ञान को सर्वोपरि करने का कार्य करती रही हैं; यहीं कारण हैं कि, स्वतंत्रता के

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue No.– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक घनिष्ठता तथा समन्वय से दूर हैं| भारतोदय हेतु हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना एवं फैलाना परम आवश्यक हैं| राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिया जाने से हमें भारतीय ज्ञान परम्परा को विकसित करने का एक सुअवसर मिला हैं| इस शिक्षा नीति के द्वारा हम भारत को विश्व गुरु बनाने का स्वप्न देख सकते हैं|

भारतीय ज्ञान परम्परा

आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म-ग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषी गुण के लिए प्रसिद्ध रहा हैं| ये तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु, प्रत्येक भारतीय के भाव हैं जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिली हैं| भारतीय संस्कृति के अवबोध, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान होना परम आवश्यक हैं इसके बिना हम बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं| बालक जिस वातायन में निवास करता हैं उसे ही आत्मसात करता हैं यही कारण हैं कि, भारतीय संस्कृति के भाव अपने आप भारतीयों में परिलिक्षित होते हैं| अतएव राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी, 2020) ने शिक्षा क्षेत्र के प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर बल दिया| राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय ज्ञान परम्परा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को ना केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगा अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सततता का अवबोध कराने की ओर अग्रसर भी करेगा|

हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जो प्रायः मनसा, वाचा, कर्मणा पर आधारित थी| इसने सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावात्मक आदि विकास पर ध्यान केन्द्रित किया था तथा आत्मनिर्भरता, सम्मान, सत्यता, नम्रता जैसे सनातन मूल्यों के सृजन पर बल दिया हैं| जो यह दर्शाता हैं कि आदिकाल से ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरुप व्यवहारिक एवं दैनंदिनी जीवन को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक रहा है| इसे यह ध्यातव्य होता हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही हैं बल्कि भूतकाल में जन्मे सभी महान व्यक्तित्व जैसे- चरक, रामानुजम, सशर्त, आर्य भट्ट, बुद्ध, रैदास, वाल्मीकि, बिस्मिलाह खां, वराह मिहिर, महात्मा गांधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोषा, सावित्री, रामाबाई, चाँदनीजी रजिये सुलतान मर टेरेगा, एन बे सेंट आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही हैं जिसे एक स्वस्थ भारतवर्ष एवं संस्कृति को पुनः स्तम्भित किया जा सके|

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह व्यापक दृष्टिकोण शिक्षार्थी में नैतिक, समाजिक एवं बौद्धिक क्षमता का सृजन करने में सहायक हो सकेगा| भारतीय दृष्टिकोण से ज्ञान प्राप्त करके ही हम विश्वगुरु बनाने की कल्पना कर सकते हैं क्योंकि किसी भी देश का विकास उसके स्वयं की सृजनात्मक एवं अनोखेपन पर निर्भर करता हैं वही भारतवर्ष तो भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक गौरव से ओत-प्रोत देश हैं| अतएव भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परम्परा को पुनः उद्घोषित करने का प्रयास करना होगा|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue No.– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

पहले हमें यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि, भारतीय ज्ञान परम्परा क्या हैं एवं हमारी शिक्षा व्यवस्था में इसकी क्या आवश्यकता हैं? जैसा कि नाम से ही विदित होता हैं कि, भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय संस्कृति के अलग-अलग काल खंड से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का द्योतक हैं| इस ज्ञान परम्परा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या, लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का संगम हैं| भारतीय ग्रन्थों में इसका विस्तारित रूप देखा जा सकता हैं | पुराण, वेद, वेदांग, वांगमय, रामायण, ब्राह्मणग्रन्थ आदि विद्या को मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ अंग स्वीकार करते हुए मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं|

प्राचीन काल की गुरुकुल पद्धति इन्हीं ग्रंथो के अधीन थी| जिसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्य को श्रुति-ज्ञान के माध्यम से पारंगत करने की कोशिश करता है| इसके द्वारा ही बालक के नैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, तार्किक गुणों को विकसित किया जाता था| प्रारम्भ से ही बच्चों को मनुष्य, प्राणी एवं प्रकृति के मध्य सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाये रखने की सीख दी जाती थी| इतना ही नहीं शिक्षण के माध्यम से बच्चों को वेदों को पढ़ने, उनका अनुपालन एवं अनुशीलन करने की शिक्षा दी जाती थी, जिसका प्रभाव उनके दैनंदनी जीवन पर भी पड़ता था| जिससे बालक समाज एवं अपने परिवार के प्रति कर्तव्यपरायण एवं जिम्मेदार बनते थे, इस प्रकार जीवन सम्बन्धी सभी मूल पक्ष इस काल की शिक्षा प्रणाली में उपस्थित थे|

इस शिक्षा व्यवस्था ने अधिगम एवं शारीरिक विकास दोनों पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया| जैसा कि विष्णु पुराण में भी कहा गया हैं कि, कर्म वही हैं जो बंधन से मुक्त करे तथा शिक्षा (विद्या) वही जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें शेष कर्म निपूर्णता प्रदान करने का कार्य करते हैं| शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने अंगीकार करते हुए सभी मठ, गुरुकुल, विश्वविद्यालय, मंदिर, पाठशाला एवं अन्य यदा-कदा शिक्षण संस्थान में स्वदेशी शिक्षा देना प्रारम्भ किया था| इन सभी संस्थानों में शिक्षण का मुख्य स्रोत मौखिक था|

आदिकालीन शिक्षा प्रणाली अर्वाचीन ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति प्रेम, मानवता को प्रोत्साहन प्रदान करने वाली थी| ब्राह्मण पुराण में भी ज्ञान को अप्रतिम माना गया हैं जो मनुष्य को सृजनशील बनाता हैं| इन्ही ज्ञानरुपी स्वरूपों का विस्तार भारत के नालान्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उज्जैयिनी, काशी, वल्लभी आदि विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाता था| जिसमें भारत के ही नहीं अपितु पास पड़ोस देश के शिक्षार्थी एवं शोधार्थी ज्ञान प्राप्त करते थे| गार्गी अपाला, ऋतम्भरा, मैत्रीय लोपमुद्रा आदि विदुषी महिलाओं ने भी भारतीय ज्ञान परम्परा में अपना अमिट योगदान दिया हैं| वहीं चरक, कात्यायन, आर्यभट्ट, शंकराचार्य, विवेकानंद, महात्मा गांधी, वराहमिहिर, कणाद आदि ने अपनी मेधा से भारत भूमि को धन्य किया हैं| त्याग, वृत्तिसपन्न, लोभ रूपी तृष्णा से परे व्यक्ति को ही पुराणों में गुरु माना गया हैं| वहीं गुरु की श्रेष्ठता का बखान करते हुए वायुपुराण में वर्णित किया गया हैं कि सभी तीर्थों में सबसे श्रेयकर तीर्थ गुरु रूपी तीर्थ हैं जहाँ से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता हैं| अतः भारतीय ज्ञान परम्परा मनुष्य को पशुता रूपी जीवन से मुक्त करते हुए मनुष्यता का अमृतपान कराता हैं इसे शिक्षा व्यवस्था से दूर करना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर हैं|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue No.– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सनातन ज्ञान परम्परा की उपयोगिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परम्परा के आलोक में निर्मित की गयी है| राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी एक केन्द्रीय स्तम्भ माना गया हैं जहाँ शिक्षा के प्राथमिक इकाई (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) से लेकर शिक्षा की अंतिम इकाई (प्रौढ़ शिक्षा) तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया हैं| यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती हैं कि शिक्षार्थी अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थायी विकास, समृद्ध जीवनयापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता हैं| इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान, परम्परा, प्रथा, विचार एवं मूल्यों को नवचारित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा ना कि एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाये तभी बालक का विकास सनातनी ज्ञान अनुरूप संभव हैं | एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें कोई भी शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य भेदभाव के कारण पीछे नहीं रहेगा| जिसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप से परिभाषित करते हुए वर्ष 2030 तक सभी बच्चों का प्राथमिक स्कूलों में 100% नामांकन करने का लक्ष्य रखा हैं| जो भारत को नयी दिशा देने में सहायक होंगें (एनईपी, 2020)| भाषा रूपी असंगतता को समाप्त करते हुए इस शिक्षा नीति ने सभी बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अपनी मातृभाषा (हिंदी) या स्थानीय भाषा (गैर हिंदी प्रदेशों हेतु) में प्रदान करने की बात कहीं हैं जो बालक को मूलभूत आवश्यकताओं एवं मूल्यों को जानने एवं समझाने में आसानी हो| इसके द्वारा बालक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा| सामाजिक विज्ञान में समाहित लक्ष्य एवं विषय (इतिहास भूगोल राजनीति समाजशास्त्र आदि) भारतीय ज्ञान, परम्परा, स्थापत्य कला एवं परम्परा आदि के बारे में सीखने-सिखाने का सुअवसर प्रदान करती हैं| इसी प्रकार भाषागत साहित्य एवं अन्य विषयों के पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान एवं सनातन ज्ञान की उपलब्धता बालक को अपने देश के बारे में जानने में मदद करेगी| अतएव जहाँ कहीं भी सम्भव हो सके कला संगीत भाषा साहित्य या नाट्यकला आदि सभी विषयों में भी इसे वैज्ञानिक रूप से स्थापित करने का प्रयास करना होगा |

वहीं इसके अन्य पक्ष पर ध्यान दिया जाये तो हमें पाठ्यचर्या निर्माण एवं शिक्षण के समय भी यह ध्यान रखने की आवश्यकता होगी की, भारतीय ज्ञान किसी सूचना या महत्वपूर्ण बिंदु (किसी कोष्ठक या बॉक्स में बंद) के रूप में ना प्रस्तुत करके किसी प्रकार की कहानी या विस्तार रूप में व्याख्यान/ विवरण दिया जाना चाहिए| तभी बालकों की उसके प्रति रूचि में वृद्धि में होगी| उदाहरण के लिए अगर शिक्षक लोकतंत्र के बारे में कक्षा शिक्षण प्रदान कर रहा हैं तो, उसे लोकतंत्र से पूर्व भारत के प्रारम्भ में प्रचलित राज व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्था या किसी उपलब्धि से अवगत कराया जाना चाहिए जिसे वह नवीन ज्ञान के साथ प्राचीन ज्ञान को भी आत्मसात कर सके| इसे सतत रूप से प्रवाहमान बनाये रखने हेतु अभिनय प्रतियोगिता, भाषण, वाद-विवाद, भ्रमण आदि तरीकों को भी अपनाया जाना चाहिए| इसे बच्चों में भारतीय इतिहास, परम्परा तथा साहित्य के प्रति जागरूकता एवं विविधता का सृजन होगा|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issue No.– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

संस्कृति एवं कला का संज्ञान प्रदान करने हेतु समय-समय पर स्थानीय कलाकारों से परिचय कराना तथा सहभागी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए| अनल शिल्पकारों को आमंत्रित किया जाना चाहिए तथा बालकों संग्रहालयों का भ्रमण कराना चाहिए| इसके अतिरिक्त भारत की नदियों, पहाड़ियों, झीलों आदि पर परियोजना बनाने का भी सुझाव दिया जाना चाहिए| जिसे बालक यह जानने में भी समर्थ हो सकेंगे की किस प्रकार से स्थानीय समस्या का समाधान स्थानीय नियमों एवं तरीकों से भी किया जा सकता हैं| इस स्थानीय ज्ञान की वर्तमान समाज के साथ क्या प्रासंगिकता है?, को भी समझने में सहायता करनी चाहिए| वर्तमान सन्दर्भ पर पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण पर हर कोई ध्यान केन्द्रित कर रहा हैं| यहाँ शिक्षकों का यह दायित्व बनता हैं कि बच्चों को प्राचीन काल में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण किये जाने वाले को कार्यों से अवगत कराए तथा तब की महान उपलब्धि के बारे में भी ज्ञान प्रदान करें| उदाहरण के प्राचीन कलाकृतियों में पीपल का चित्र की क्या आवश्यकता थी? धर्म ग्रंथों में पीपल, बरगद और नीम वृक्ष की क्यों उपयोगी माने गए हैं माथे पर चंदन का टीका क्यों लगाते हैं? आदि अनेकों प्रश्न हैं जिसे शिक्षार्थी को अवगत कराया जाना चाहिए जिसे वह इसकी उपयोगिता अपनी आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित कर सके|

इस प्रकार के सनातन ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को समाहित करके पढ़ाने वाले शिक्षक बहुत ही प्रचुर मात्र में उपलब्ध हैं इसलिए इसके लिए शिक्षकों को दोष नहीं दिया जा सकता हैं लेकिन अब उन्हें पुनः इसके अनुरूप प्रशिक्षित अवश्य किया जा सकता हैं| इसके लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए|

विचार-विमर्श

भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक हैं| भारतीय ज्ञान परम्परा को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए| राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिये गए निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक हैं की हम पहले इन निर्देशों को एक खोजपूर्ण तरीकें से ग्रहण करें| तत्पश्चात पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षण अभिकल्प एवं अधिगम सम्बन्धी उपकरण आदि पर ध्यान केन्द्रित करें| केवल सत्यपूर्ण एवं वैज्ञानिकता के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सनातन ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सकते हैं तभी आगामी पीढ़ी इस भारतीय गौरव आगे आनुभव कर सकेगी|

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

एनईपी .(2020)*नेशनल एजुकेशन पॉलिसी* .न्यू दिल्ली.एमएचआरडी :

Cite This Article:

प्रो. गीता सिंह, (2022). *भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता, Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal, XI (I),8-12.*